बेटी बचाओं, बेटी पढाओ योजना

कन्या के जन्म एवं शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भारत के प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 22 जनवरी 2015 को दो कार्यक्रमों की शुरूआत पानीपत, हरियाणा से की। ध्यान रहे हरियाणा प्रान्त में लिंगानुपात सबसे कम है। भारत का लिंगानुपात 917 है जबकि हरियाणा का लिंगानुपात 837 ही है।

प्रधानमन्त्री जी द्वारा 22जनवरी 2015 को घोषित दो योजनाएं हैं –

1. बेटी बचाओ, बेटी पढाओ।
2. सुकन्या समृद्धि खाता।

योजना क्यों?

यू.एन.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार भारत में घटता लिंगानुपात एक भयानक संकट की ओर संकेत कर रहा है। कन्या भ्रूणहत्या इस गिरते लिंगानुपात का प्रमुख कारण है। कन्या भ्रूण हत्या एक विकृत मानसिकता की उपज है। बेटे की चाह में बेटी को संसार में आने से रोकना उसके अधिकार का हनन है। तमाम कानूनी वर्जनाओं के बावजूद भी आज गर्भ में पलते भ्रूण का लिंग अल्ट्रासाऊण्ड सोनोग्राफी के माध्यम से पता लगाकर कन्या भ्रूण होने पर गर्भ समापन करा दिया जाता है। विडम्बना तो यह है कि इस कुकृत्य में जीवन देने वाला डाक्टर भी अहं भूमिका निभाता है। माँ नहीं चाहती कि उसकी कोख में पल रही कन्या संसार में आने से पूर्व ही हत्यारों का शिकार बन जावे परन्तु पारिवारिक एवं सामाजिक दबावों के चलते हुए उसे ऐसा करना पडता है। कन्या पर अत्याचार भ्रूण हत्या एवं जन्म के बाद शिशु वध तक ही सीमित नहीं रहता। जीवन के प्रत्येक पायदान पर कन्या के साथ भेदभाव होता है और उसे उपेक्षा सहन करनी पडती है। पोषण, शिक्षा और जीवनस्तर के परिप्रेक्ष्य में कन्याएँ परिवार व समाज द्वारा दोयम दर्जे के रूप में व्यावहारित (Treated) होती हैं। जहाँ एक ओर लडके को

उच्च पोषण युक्त भोजन, अच्छे वस्त्र व अच्छा स्कूल नसीब होता है दूसरी ओर लडकी को बोझ मानते हुए एवं पराये घर का कूडा मानते हुए उसके लालन पालन एवं शिक्षा दीक्षा में भेदभाव होता है। यदि कन्या सौभाग्य से पढने भी जाने लगे तो कालेज जाने की उम्र में ही उसकी जल्दी शादी कर दी जाती है। इतना ही नहीं वह बलात्कार, अपहरण, छेडछाड एवं दहेज हत्या की भी शिकार होती है। महँगी होती शादियाँ एवं दहेज की उच्च मांग से भी माता–पिता पर बच्ची एक भीषण जिम्मेदारी बन जाती है।

यह बात चौंकाने वाली है कि कन्या भ्रूण हत्या की घटनाएँ सभी आर्थिक स्थिति वाले परिवारों एवं शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में घटित हो रहीं हैं। दुखद स्थिति तो यह है कि सम्पन्न परिवार की सुशिक्षित महिलाएँ भी पुत्र चाहती हैं।

आओ घटते बाल लिंगानुपात (Child Sex ratio) पर भी एक नजर डालें–

जनसंख्या आँकडे और कन्यायें–

वर्ष	0 से 6 वर्ष लडकियाँ	0–6 वर्ष लडके
1971	964	1000
1991	945	1000
2001	927	1000
2011	919	1000
वर्तमान	917	1000

जनसंख्या के ये आँकडे उस भयावह स्थिति की ओर इशारा करते हैं जब कोई बच्चा पैदा ही नहीं होगा। संयुक्त राष्ट्र के एक अध्ययन में चेताया गया है कि देश में लडकियों की संख्या आपातकालीन अनुपात (Emergency proportion) तक पहुँच चुकी है।